इकाई 1 ऑस्ट्रेलिया : भूमि और लोग

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 भौगोलिक रचना

1.3.1 महान पश्चिमी पठार

1.3.2 मध्य पूर्वी मैदान

1.3.3 पूर्वी उच्च भूमि

1.4 जलवायु

1.5 ऑस्ट्रेलियाई लोग

1.5.1 जनसंख्या नीतियों का प्रादुर्भाव और विकास

1.5.2 जनसंख्या की विशेषताएँ

1.5.3 ऑस्ट्रेलियाई अस्मिता (पहचान) और परिकल्पना

1.6 सारांश

1.7 अभ्यास

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के मध्य में ऑस्ट्रेलिया की सांस्कृतिक (cultural) और भौगोलिक (topographial) रचना की दृष्टियों से एकात्मकतापूर्ण देश माना जाता था। यह एकात्मकता यूरोप के विभिन्न राष्ट्रीयताओं (nationalities) द्वारा विभाजित एवं बाधावरोधोंग्रस्त स्वरूप की तुलना में बहुत ही विलक्षण प्रतीत होती थी। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से यहाँ भी जनसंख्या की विविधताओं और परिवर्तनशील संरचना की ओर ध्यान आकृष्ट होने लगा है। आधुनिक ऑस्ट्रेलिया का उदय ब्रिटिश साम्राज्य की सज़ायाफ्ता बस्ती के रूप में सन् 1788 में हुआ। वहाँ स्वेच्छा से बसे लोग बहुत ही कम थे। ये बस्तियाँ पूर्वी तटीय प्रदेश से आरंभ हुई किन्तु शीघ्र ही ऊनी उद्योग ने पैर पसारने आरंभ किए और स्थानीय मूल निवासियों तथा उनकी भूमि पर गुलामी की छाया छाने लगी। आज मूलवासियों को एक अलग सामाजिक वर्ग माना जा रहा है – साम्राज्यवादी युग की गलतियों का कदाचित परिमार्जन भी हो रहा है। यही नहीं, विश्व के प्रायः सभी देशों से आकर बस रहे आप्रवासी अब ऑस्ट्रेलिया को एक बहुसांस्कृतिक (multicultural) देश का स्वरूप प्रदान कर रहे हैं।

"नीचे की भूमि" (down under) कहा जाने वाला ऑस्ट्रेलिया एशिया महाद्वीप के दक्षिण पूर्व में, किन्तु दक्षिणी गोलार्द्ध में अवस्थित है। यह विश्व का विशालतम द्वीप और सबसे छोटा महाद्वीप है। इसकी किसी देश के साथ सांझी सीमा नहीं है। इसका भूक्षेत्र 77,13,360 वर्ग किलोमीटर (29,78,145 वर्ग मील) है। मुख्य द्वीप तथा साथ लगते टोरेस जलडमरू और तस्मानिया के द्वीप मिलकर ऑस्ट्रेलिया राष्ट्रकुल का निर्माण करते हैं। प्रशासकीय दृष्टि से इस देश को 6 प्रान्तों और 3 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। ये राज्य हैं : न्यू साउथ वेल्स, क्वीन्सलैण्ड, विक्टोरिया, तस्मानिया, दक्षिण ऑस्ट्रेलिया और पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया। तीन प्रशासकीय क्षेत्रों के नाम हैं : ऑस्ट्रेलियाई राजधानी क्षेत्र (Australian Capital Territory; ACT)), उत्तरी क्षेत्र तथा जर्विस खाड़ी क्षेत्र (Jervis Bay Territory)।

यह इकाई दो भागों में विभाजित है और इसमें हम ऑस्ट्रेलिया की भूरचना तथा जनसंख्या पर विचार कर रहे हैं। पहले भाग में ऑस्ट्रेलियाई भूखंड की भौगोलिक विशेषताओं और जलवायुगत विविधता आदि पर चर्चा होगी। दूसरे भाग में यहाँ की जनरचना पर विहंगम दृष्टिपात के साथ-साथ आपको यह भी समझाने का प्रयास किया जाएगा कि एक ऑस्ट्रेलियाई होने का अर्थ क्या होता है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- ऑस्ट्रेलिया की मुख्य भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- ऑस्ट्रेलियाई जनसंख्या के मुख्य लक्षणों के बारे में समझ सकेंगे;
- ऑस्ट्रेलियाई समाज की जातीय एवं सांस्कृतिक जटिलताओं के बारे में जान सकेंगे; और
- ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय अस्मिता (पहचान) (National identity) की एक रूपरेखा को परिभाषित कर सकेंगे।

1.3 भौगोलिक रचना

ऑस्ट्रेलिया का अधिकांश भूक्षेत्र मैदानी है – यहाँ बहुत ऊँचे पर्वत नहीं हैं। देश के भीतरी भागों में अवश्य कुछ प्राचीन पर्वतों के बचे खुचे अवशेष दिखाई पड़ जाते हैं। अतः ऑस्ट्रेलिया का धरातल मुख्यतः बड़े-बड़े मैदानों से भरा हुआ है जिसमें हर जगह नदियों के कछार भी दिखाई दे जाते हैं (मुख्य कछार (Basins) हैं : मुरे (Murray), जिप्सलैंड (Gippsland), युक्ला (Eucla), कारपेंटेरिया (Carpentaria), लेक आयर (Lake Eyre) आदि)। ये कछार धीरे-धीरे भर गए हैं – अब इन्हीं में से कुछ एक में कोयला तथा तेल के भंडार भी मिल रहे हैं। इस देश में युवा तहदार पर्वत नहीं हैं, न ही कोई सक्रिय ज्वालामुखी है और बड़ी नदियाँ भी नहीं हैं। एक पहाड़ियों की श्रृंखला देश के पूर्वी तट के साथ-साथ चल रही है। इसे महान विभाजक श्रृंखला (Great Dividing Range) का नाम दिया गया है। देश के पूर्वी, दक्षिणपूर्व और दक्षिण

पश्चिम के नीचे तटीय प्रदेशों में ही अधिकांश जनसमुदाय बसा है। ऑस्ट्रेलिया के उत्तर पूर्वी तट के साथ-साथ विश्व का सबसे बड़ा प्रवाल क्षेत्र – ग्रेट बैरियर रीफ (Great Barrier Reef) भी स्थित है। ये प्रवाल क्षेत्र तट के साथ-साथ 2012 किलोमीटर (1,250 मील) की लम्बाई में फैला हुआ है।

यूरोप और उत्तरी अमेरिका में तो अधिकांश भूमि को पिछले हिमयुग की देन और लगभग इसे 20,000 वर्ष पुरानी मानी जाती है। किन्तु ऑस्ट्रेलियाई भूक्षेत्र तो लाखों वर्षों की अपनी विशेषताएँ संजोए हुए हैं। इसी दीर्घ आयु के कारण ऑस्ट्रेलिया को "जीवष्मीय महाद्वीप" (fossil continent) भी कह दिया जाता है – पर इसकी अधिकांश वर्तमान विशेषताएँ अपेक्षाकृत नूतन घटना क्रमों का ही परिणाम है। बारंबार महासागरीय अतिक्रमण (geological movements) ने भूक्षेत्र को रेत, शंख-सीपियों तथा मिट्टी से ओतप्रोत कर दिया है – साथ ही उष्ण और शुष्क जलवायु ने सूखी नदियों और रेत के टीलों की रचना की है। इसी रचना क्रम में "दक्षिणी रेत की मिट्टी कुछ उत्तर की अपेक्षा कुछ अधिक ऊँची उठ गई है। इन्हीं के कारण मैदानों की समरूपता में कुछ विविधता आ गई है।

मिट्टी के इसी "प्रवाह" ने ऑस्ट्रेलिया को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया है किन्तु इस स्वरूप में नदियों द्वारा भू-कटाव ने अपनी विशिष्ट छटा से सजाया संवारा है। भले ही नदियाँ उच्च क्षेत्रों के अपने स्रोत के आस-पास की मिट्टी बहा ले जाती हों पर निचले क्षेत्रों में वहीं मिट्टी जमा भी हो जाती है। अधिकांश नदियाँ ऐसी नमक की झीलों में जाकर समाप्त हो जाती हैं जो प्रायः सूखी ही दिखाई देती हैं। कुछ ही नदियाँ समुद्र तक पहुँचती हैं। इन्हीं ने देश के तटवर्ती क्षेत्रों को पर्वत, पठार और घाटियों का आकार दिया है। ऑस्ट्रेलिया की जल निष्कासन संरचना का बड़ा लम्बा इतिहास है और कुछ एक नदी घाटियाँ तो करोड़ों वर्षों से अपने स्वरूप को यथावत बनाए हुए है। पश्चिम ऑस्ट्रेलिया में यिल्गार्न (Yilgarn) पठार की नमकीन झीलें तो उस जल निष्कासन व्यवस्था का अवशेष हैं जो ऑस्ट्रेलिया के अंटार्कटिका से पृथक होने से पूर्व विद्यमान थी।

पिछले हिम युग में समुद्र जल स्तर वर्तमान से 100 मीटर नीचा था और नदियाँ उस स्तर तक भूमि की कटाई कर चुकी थीं। पर बर्फ पिघलने पर समुद्र का स्तर ऊँचा उठा तो अनेक घाटियाँ उससे आप्लावित हो गई। कुछ में सिडनी जैसी शानदार प्राकृतिक बंदरगाह बनी है तो कुछ नदियों द्वारा लाई गई रेत से भर गई है। यही ऑस्ट्रेलिया के निम्न तटीय प्रदेशों की वर्तमान रचना है।

ऑस्ट्रेलिया की तटेंतर संरचना (offshore shape) में विद्यमान समरूपता उस महान महाद्वीप की देन है जिससे टूटकर ये द्वीप अलग हुआ है। ऑस्ट्रेलिया के चारों और एक चौड़ी महाद्वीपीय पट्टी फैली है और उसका ढाल बहुत तीखा है। केवल न्यू साउथ वेल्स में यह पट्टी काफी संकरी है। पिछले बीस लाख वर्षों में ही क्वीन्सलैण्ड के तट से परे के जलमग्न पठार पर ग्रेट बैरियर रीफ पैदा हुई है। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया में जलमग्न घाटियाँ महाद्वीपीय पट्टी में नक्काशी की तरह प्रतीत होती हैं।

ऑस्ट्रेलिया की वर्तमान भूरचना विशिष्ट परिवेशों में दीर्घकालिक एवं निरंतर चली आ रही प्रक्रियाओं का परिणाम है। इसी ने ऑस्ट्रेलिया में प्राणी विज्ञान एवं मानवीय गतिविधियों के विभाजन की रूपरेखा रची है।

ऑस्ट्रेलिया को भौतिक भौगोलिक दृष्टि से तीन क्षेत्रों में बाँटा जाता है: महान पश्चिमी पठार, मध्य पूर्व के मैदान और पूर्वी उच्च भूमि पट्टी। जगह-जगह सागर-आप्लावन के परिणामस्वरूप बने छिछले क्षेत्र भी दिखाई दे जाते हैं (अटार्कटिका को छोड़कर)। ऑस्ट्रेलिया सभी महाद्वीपों में निम्नतम, मैदानी और शुष्कतम महाद्वीप माना जाता है। इसी से इस देश की अपनी विशिष्ट भौतिक भौगोलिक रचना का निर्माण हुआ है।

1.3.1 महान पश्चिमी पठार

पश्चिमी पठार ऑस्ट्रेलिया के भू-भाग के दो-तिहाई अंश को आत्मसात् किए हुए हैं। इसी में इसके अधिकांश मरुस्थल, खारी झीलें और खानें भी समाई हुई हैं। यह कम से कम 50 करोड़ वर्षों से एक ही भू-क्षेत्र के रूप में विद्यमान रहा है और इसमें 300 करोड़ वर्षों पुरानी चट्टानों/पहाड़ियों की भरमार है। इसके अनेक क्षेत्रों को पृथक-पृथक नाम भी दिए जा चुके हैं – जैसे कि किंबर्ले (Kimberley), हैमर्स्ले (Hammersle)), एर्नेम लैण्ड (Arnhem Land), यिल्गार्न (Yilgarn) आदि। पर्थ क्षेत्र में तटीय पट्टी की अपेक्षाकृत नई चट्टानों को डार्लिंग भ्रंश नामक दरार ने प्राचीन संरचना से अलग कर दिया है। नलर्बर का उच्च मैदान तो वस्तुतः ऊपर को उठ आया सागर तल ही है। यह चूने के पत्थरों का मैदान मध्य नूतन युग की ढाई करोड़ वर्ष पुरानी रचना है। कुछ एक पहाड़ी श्रृंखलाओं को छोड़ कर ऊँची पर्वतमालाओं के अभाव ने ही इस क्षेत्र की जलवायु तथा नदी व्यवस्थाओं का निर्माण किया है। वैसे ये पहाड़ियों की श्रृंखलाएँ स्थानीय रूप से बहुत "महत्वपूर्ण" प्रतीत होती हैं – इन्हीं में से "एयर की पहाड़ी" (Ayer's Rock) और "ऑल्गा पर्वत" (Mt. Olga) जैसे एकाश्म तो बहुत ही विख्यात हैं।

इस पठारीय भूक्षेत्र की मुख्य विशेषता यहाँ की रूक्ष सूखी धरती ही है। यह रूक्षता वायु क्षरण, उच्च तापमान और सूखी प्यासी मिट्टी के जल द्वारा क्षरण का परिणाम है – इस प्रक्रिया में प्रायः चट्टानें भी चटक जाती हैं। कम वर्षा, तीव्र शोषण दर और स्थायी जल प्रवाह यानी न बहने वाली नदियों ने ही खारी झीलों को जन्म दिया है – ये देश के दक्षिण पश्चिम में मुख्यतः केन्द्रित हैं। यदा-कदा होने वाली छिटपुट वर्षा के तुरन्त सूख जाने से ही नमक और निप्सम (खड़िया मिट्टी) की पतली से स्तर बची रहती है। बार-बार जमा होने वाली यही सतहें अब उस क्षेत्र पर छा गई हैं। प्राचीन जल प्रवाह जहाँ एकत्रित होते थें उन्हीं छिछले क्षेत्रों में अब ये नमक की तहें जम गई हैं। तेज़ हवाओं ने इन तहों को टीलों का आकार भी दे दिया है। ऑस्ट्रेलिया की प्राचीन स्थानीय सभ्यता के अनेक अवशेष इसी नमक के टीलों से भरे क्षेत्र में पाए गए हैं। आज भले ही वहाँ रूक्षता का साम्राज्य फैला हुआ है पर भूगर्भशास्त्रीय दृष्टि से ये रूक्षता बहुत ही नवीन है – मुश्किल से दस लाख वर्ष पुराना ही इसका इतिहास है। ऐसी ही भूरचना की विशेषताओं के प्रमाण स्वरूप हम रेत के पहाड़ों के मरू क्षेत्रों के उदाहरण ले सकते हैं – इनमें से प्रमुख हैं: विराह रेतीला, गिब्सन और सभी ऑस्ट्रेलिया के मध्य निम्न

मैदानी क्षेत्र के सिंयसन रेगिस्तान। रेत के टीले बालू के प्रवाह की दिशा में ही लम्बाकृति धारणा करते गए हैं। अब उनकी स्थिति स्थिर प्रायः हैं। यहीं नहीं, पथरीले रेगिस्तान – जिनमें छोटे-छोटे पत्थर ही सारे धरातल पर छाए हुए हैं, पूरी तरह से रेतविहीन दिखाई देते हैं। वास्तव में इतना भूक्षेत्र रेत के टीलों से कहीं अधिक विस्तृत है।

इस क्षेत्र के दो-तिहाई भाग में नदियों का नामोनिशान भी नहीं है। इसी कारण सतह और जमीन के नीचे भी पानी का नितांत अभाव है। केवल दक्षिण पश्चिम में ही छोटी-छोटी स्थायी जल प्रवाह वाली नदियाँ हैं – अतः इस विशाल भूभाग के केवल दक्षिण पश्चिम में ही मानवीय जीवनयापन के लिए उपयुक्त जलवायुगत परिस्थितियाँ पाई जाती हैं। दूसरी मानवीय उपस्थिति को सहज बनाने वाली विशेषता इस क्षेत्र में फैली खनिज संपदा है जिसके खनन के लिए भी खनिकों की बस्तियाँ बस गई हैं। यहाँ चाँदी, शीशा, जस्ता, सोना, ताँबा, लोहा आदि के अयस्क तो अच्छी मात्रा में मिल ही जाते हैं साथ ही टिन, मोलीबदनम, टिटेनियम, टेंटालम, टंगस्टन और एस्वेस्टस के भण्डार भी मौजूद हैं। हाँ कोयला केवल दक्षिण पश्चिम के ही थोड़े से क्षेत्र में मिलता है – वहीं इसका खनन् हो रहा है।

1.3.2 मध्य पूर्वी मैदान

ये मैदानी क्षेत्र कार्पेटेरिया खाड़ी से लेकर विशिष्ट-उत्स्रत द्रोण (Great Artesan Basin) होते हुए मरे-डार्लिंग के मैदानों (Murray-Darling Plains) तक फैला है। उत्स्रत द्रोण की तहदार चट्टानों में पानी ठहर जाता है और धीरे-धीरे रिसकर पूर्वी उच्च भूमि के आर्द्र क्षेत्रों तक पहुँच जाता है। इस सारे क्षेत्र की समुद्र तल से ऊँचाई 800 फुट से कम ही है और ये क्वीन्सलैण्ड के पश्चिमी और मध्य भागों से न्यू साउथ वेल्स होते हुए उत्तरी क्षेत्र और दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के कुछ भागों तक फैला हुआ है।

अधिकांश मध्य ऑस्ट्रेलिया मैदानी ही है पर इसमें भी मैक्डोनेल (Macdonnell) और मस्ग्रेव (Musgrave) आदि की पहाड़ियों की श्रृंखलाएँ मौजूद हैं – यूलरू (Uluru) का पर्वत भी एक जाना माना नाम है। इस क्षेत्र में दरारें पड़ने और सतह के तहदार बनने के काम बहुत ही पहले हो चुके हैं। प्रायः समस्त भूमि क्षरण के परिणामस्वरूप मैदान में परिवर्तित हो चुकी थी। इन्हीं मैदानों में से कुछ अंश भूगर्भीय उथल-पुथल से ऊपर उठकर आज पाई जा रही पहाड़ियों का रूप धारण कर गए हैं। फिर भी अधिकांश क्षेत्र में तो सीधे सपाट मैदान ही दृष्टिगोचर होते हैं।

इस मैदान के दक्षिण ऑस्ट्रेलियाई भाग में भूगर्भीय उथल पुथल की प्रक्रिया बहुत बाद तक चलती रही हैं और अनेक उतार-चढ़ावपूर्ण पर्वतीय श्रृंखलाएँ बन गई हैं (लोफटी पर्वत, लांडर्स श्रृंखला आदि) इसी प्रक्रिया में नीचे दब गए क्षेत्रों पर कहीं-कहीं तो सागर ने भी कब्जा कर लिया है (स्पेंसर की खाड़ी)।

यहाँ पर उत्स्रुत द्रोणों में विकसित आंतरिक जल निष्कासन व्यवस्था के विकास पर भी ध्यान देना जरूरी लगता है। महाद्वीप की भूगर्भीय चट्टानों की रचना कुछ ऐसी बनी है कि ये पूर्व की ओर ऊँची तथा मध्य में कुछ नीची हो गई हैं। इसी कारण से एक बहुत बड़ा द्रोण बन गया

है। ऐयर झील नाम से विख्यात यह द्रोण विश्व का विशालतम आन्तरिक जल प्रवाह क्षेत्र है। सबसे बड़ी बातें तो ये हैं कि इसका किसी खुले समुद्र से कोई संपर्क नहीं है – ढलान बहुत धीमा है – अतः पानी बहुत ही मंथर गति से बहता है और ये बहाव कम वर्षा तथा अधिक शोषण के क्षेत्र की ओर होता है। गर्मियों की मानसूनी वर्षा केवल मौसम में ही नदियों में पानी भर पाती है वह भी विशाल लवण क्षेत्र बन चुकी झीलों तक पहुँचने से पहले ही सूख जाता है। मुरे-डार्लिंग द्रोण इस छिछली भूमि की दूसरा विशालतम संरचना है। डार्लिंग ऑस्ट्रेलिया की सबसे बड़ी नदी है। पर यह भी इस जल प्रवाह व्यवस्था में बहुत कम जलदान कर पाती है। हाँ मुरे और उसकी सहायक नदियाँ यहाँ निरंतर जल आपूर्ति बनाए रखती हैं। तीसरा बड़ा द्रोण सुदूर उत्तर में है – वहाँ खाड़ी का द्रोण अन्ततः कार्पेंटेरिया की खाड़ी में विलीन हो जाता है।

1.3.3 पूर्वी उच्च भूमि

केन्द्रीय ऑस्ट्रेलिया से पूर्व की ओर बढ़ते हुए भू-क्षेत्र निरंतर एक पठार से दूसरे उच्चतर पठार की ओर यात्रा का परिदृश्य रचता है। और 2228 मीटर ऊँचा कॉशियस्ज़को पर्वत (Mt. Kosciuszko) इसका उच्चतम अंग कहा जाता है। कुछ अपेक्षातया नए भ्रंश और तहें भी हैं। इनमें केनबरा के निकट लेक जॉर्ज भ्रंश तथा सिडनी के निकट लैपस्टोन एक वलय बहुत प्रसिद्ध हैं।

केपयॉर्क से तस्मानिया द्वीप तक फैली ये उच्च भूमि महाविभाजक श्रृंखला का नाम पा गई हैं भ्रामक किन्तु प्रचलित है। इसे हम भ्रामक इसलिए कहते हैं कि भले ही इस उच्च भूमि द्वारा नदियों के दो वर्ग बन जाते हैं। एक केन्द्रीय ऑस्ट्रेलिया तो दूसरा प्रशान्त महासागर की ओर प्रवाहित होने वाला किन्तु यह विभाजक श्रृंखला तो झीलों तथा हवाई पट्टियों से भरा समतल मैदान ही है – इसमें कोई "बँटवारा" निर्धारित करने वाले पर्वत शिखरों की श्रेणियाँ दिखाई नहीं देती हैं। हाँ केवल पूर्वी विक्टोरिया में पहुँचकर ये पठार जल क्षरण के कारण दो खंडों में विभक्त हो गया है। अधिकांश स्थानों पर समुद्र तल से ऊँचाई 1200 फुट से कम ही है। सारे धरातल की रचना पर्वतीय क्षेत्र कम पठारीय क्षेत्र अधिक दिखाई देती है।

पूर्वी उच्च भूमि में कहीं-कहीं पठार ने जल द्वारा भूरक्षण के कारण ऊँची-नीची पहाड़ियों का आकार पा लिया है और इसके पूर्वी छोर की रचना तीखे कगारों सी लगती है। उत्तरी क्वीन्सलैण्ड से लेकर, विक्टोरिया की सीमा तक तो इन कगारों की ही एक श्रृंखला सी बन गई है। इन्हीं "कगारों" के ऊपर से गिरते हुई नदियाँ ऑस्ट्रेलिया के सबसे ऊँचे जल प्रपातों का निर्माण करती हैं। इनके उदाहरण है : मैकली पर वौलेंबी (Wollombi on the Macleay), हर्बर्ट की सहायक पर वालामैन (Falls on a tributary of the Herbert)। केर्न के निकट बैरोन प्रपात (Barron Falls) और नीले पहाड़ का वेंटवर्थ प्रपात (Great Arscarpment)।

भले ही तस्मानिया मुख्य भूमि से अलग द्वीप हो किन्तु उसकी रचना भी पूर्वी उच्च भूमि वाली ही जैसी ही विशेषताओं से भरी है। इसी कारण से इसे उच्च भूमि का ही अंश माना जाता है।

1.4 जलवायु

साढ़े पाँच से एक करोड़ वर्ष पूर्व ऑस्ट्रेलिया का भूखंड अंटार्कटिका के साथ की अपनी स्थिति से टूटकर उत्तर की दिशा में खिसकने लगा था। यहाँ की जलवायु में अनेक परिवर्तन भी आए हैं। किन्तु इनका कारण किसी भी दृष्टि से अक्षांतर परिवर्तन नहीं रहा। दक्षिण ध्रुव के पास में भी ऑस्ट्रेलिया का जलवायु उष्ण आर्द्र ही था। देशांतर परिवर्तनों के बाद भी बहुत समय तक जलवायु की यही विशेषता बनी रही। संभवतः इन्हीं परिस्थितियों द्वारा देश भर में पाई जाने वाली लौह अयस्क पूर्ण धरातलय विशेष रचनाएँ निर्मित हुई होंगी। अपने वर्तमान अंक्षांश पर पहुँचकर ही ऑस्ट्रेलिया को रूक्षत (शुष्कता) का सामना करना पड़ा। संभवतः पहले इसका उत्तरी भाग जो इतना शुष्क नहीं रहा होगा।

तापमान

ऑस्ट्रेलिया की जलवायु इसके अपने आकार भू-मध्य रेखा से निकटता और आस-पास के महासागरों से प्रभावित है। यद्यपि विश्वभर में तापमान आदि में भारी परिवर्तन आते रहते हैं किन्तु किसी अन्य बड़े भूभाग के पड़ोस के अभाव और ऊँचे पहाड़ आदि की अनुपस्थिति के कारण ऑस्ट्रेलिया में तापमान में अधिक उच्चावचन नहीं होता। देश के उत्तरी भागों में "उष्णकटिबंधीय मानसूनी तो दक्षिण में समशीतोष्ण सी जलवायु रहती है। देश का 40 प्रतिशत भाग उष्णकटिबंध में आता है। यहाँ दो ही ऋतुएँ होती हैं: उष्ण आर्द्र और उष्ण शुष्क। देश के दो-तिहाई भाग में तो रेगिस्तान है – अतः स्वाभाविक ही अधिकांश आबादी तटीय समशीतोष्ण क्षेत्रों में बसी है। यहाँ तापमान में भारी बदलाव नहीं आते – यहाँ की रचना ही ऐसी है कि यहाँ कड़ाके की ठंड नहीं पड़ पाती है। देश के सभी भीतरी स्थानों पर तेज़ लू चलती हैं – हाँ तटीय क्षेत्रों में इसका प्रभाव कम रहता है। दक्षिण क्षेत्रों में गर्मियों का तापमान 65 से 75 अंश फार्नहाइट होता है तो उत्तरी भागों में यह 80-85 अंश तक पहुँच जाता है। पश्चिम ऑस्ट्रेलिया में मार्बल बार देश का उष्णतम स्थान है – यहाँ का तापमान 100 अंश फार्नहाइट से भी ऊँचा चला जाता है।

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का सबसे सर्द महीना जुलाई है। उस मास में देश के दक्षिणी भागों में 1500 फुट से नीचे स्थानों पर (तापमान कम हो सकता है) तापमान 45-55 अंश के बीच रहता है किन्तु उत्तरी तट की एक संकरी पट्टी में उस समय भी तापमान 75 अंश फार्नहाइट यहाँ भी टिका रहता है।

वर्षा (Precipitation)

महाद्वीप के 40 प्रतिशत भागों में वर्षा का औसत 10 इंच वार्षिक से भी कम रहता है। केवल 9 प्रतिशत भू-भाग में ही 40 इंच से अधिक वार्षिक वर्षा होती है। ऑस्ट्रेलिया में पूर्वा हवाएँ चलती हैं और जैसे-जैसे यह हवाएँ आंतरिक क्षेत्र की ओर प्रवाहित होती हैं, इनकी आर्द्रता घटती जाती है। अतः पूर्वी तटीय पहाड़ियों में ही अधिकतम वर्षा होती हैं यहाँ गर्मी और सर्दी, दोनों ही ऋतुओं की वर्षा होती है। यहाँ पर ही अधिकतम वार्षिक वर्षा और 170 इंच से ऊपर

रहती है। उत्तर-पश्चिमी तस्मानिया इससे दूसरे क्रम पर आता है और वहाँ की औसत 140 इंच रहती है।

जार्विस खाड़ी से कैप यार्क प्रायद्वीप के बीच के पूर्वी तट पर वर्षापात मध्यम रहता है। यहीं स्थिति पश्चिमी किंबरले, एल्पस, न्यू साउथ वेल्स और पूर्वोत्तर तस्मानियाई उच्च भूमि में भी रहती है। किन्तु महाद्वीप के शेष सभी भीतरी भागों में वर्षा का औसत 10 इंच वार्षिक से कम ही रहता है।

पूर्वोत्तर क्षेत्रों को छोड़ कर शेष देश में वर्षा मुख्यतः उष्णकटिबंधीय (Trophical) एवं दक्षिणात्मक न्यू समूहों पर निर्भर रहती है। उष्णकटिबंधीय न्यून दबाव प्रायः गर्मियों में ही सक्रिय होते हैं और इनके कारण दिसम्बर से मार्च तक उत्तरी पूर्वी तथा कुछ मध्यवर्ती क्षेत्रों में वर्षा होती है। दक्षिणी न्यून दबाव मुख्यतः सर्दियों में सक्रिय होकर दक्षिण पश्चिम और दक्षिण ऑस्ट्रेलिया तथा तस्मानिया के कुछ भागों में वृष्टि लाभ पहुँचाते हैं।

अतः गर्मियों की सारी वर्षा उत्तर और पूर्व में तो सर्दियों की सारी वर्षा दक्षिण पश्चिम में होती है। हाँ विक्टोरिया और तस्मानिया में वर्षापात अपेक्षाकृत अधिक समतापूर्ण रहता है। यहाँ अक्टूबर में सबसे अधिक वर्षा होती है। किन्तु देश के मध्यम तथा उत्तर-पश्चिम में वर्षा अधिक भरोसे के योग्य नहीं होती।

1.5 ऑस्ट्रेलियाई लोग

1.5.1 जनसंख्या नीतियों का प्रादुर्भाव और विकास

ऑस्ट्रेलियाई लोग कौन हैं? क्या ये इस देश के मूल निवासी हैं या फिर यूरोप से आए आप्रवासी हैं? क्या नवआप्रवासी वर्ग ने ऑस्ट्रेलियाई समाज में भारी परिवर्तन ला दिया है। जनसंख्या की संरचना कैसी है और क्या इसमें और बदलाव आएँगे। ऑस्ट्रेलियावासियों की धारणाएँ और उनके सांस्कृतिक जीवन मूल्य किस प्रकार के हैं?

यह तर्क दिया जाता है कि ऑस्ट्रेलिया विश्व का सर्वाधिक सांस्कृतिक बहुलतापूर्ण देश है। इस बहुलता का कारण देश की आव्रजन नीतियाँ हैं। ऑस्ट्रेलियाई समाज और जनमानस की परिवर्तनशील रचनाओं को समझने के लिए इसकी जनसंख्या संरचना की समझ बहुत आवश्यक है। आरंभ में ऑस्ट्रेलिया के समाज में बहुत अधिक विविधता नहीं थी। आप्रवासी मुख्यतः इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड और वेल्स से ही आए थे। ऑस्ट्रेलियाई संघ की रचना (1901) के समय भी संयुक्त राज्य (इंग्लैण्ड और आयरलैण्ड, वेल्स) में जन्में लोग सभी आप्रवासियों में सबसे अधिक (58 प्रतिशत) थे। इनमें से आयरिश 21 प्रतिशत थे। शेष आप्रजनन मुख्यतः पश्चिम यूरोप के श्वेतों तक ही सीमित था। यहाँ तक कि आकर बसने के इच्छुकों को किसी एक यूरोपीय भाषा में श्रुतलेख की कसौटी पर भी खरा उतरना पड़ता था। इसे "श्वेत ऑस्ट्रेलिया नीति" कहा जाता था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद तो यह मान लिया गया कि जनसंख्या वृद्धि अपरिहार्य है – अतः देश में "बढ़ो या मिटो" का नारा लगाया गया था। इस

दौर में पोलैण्ड, हंगरी, जर्मनी, चैकोस्लोवाकिया, नीदरलैंड, इटली, ग्रीस, युगोस्लाविया तथा टर्की आदि अनेक देशों से आकर लोग यहाँ बसने लगे। श्वेत यूरोपीयों के पक्ष में चल रही आप्रजनन नीतियाँ धीरे-धीरे निरस्त हो गई। 1970 के दशक के आरंभ में इस नीति को तिलांजली देकर आव्रजन कार्यक्रम का आकार बहुत विस्तृत कर दिया गया। तब से ऑस्ट्रेलियाई समाज की जनसंख्या की रचना में नाटकीय परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। वर्ष 2000 में 24 प्रतिशत – अर्थात् 4 में से एक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक का विदेश में जन्म हुआ था और इसी वर्ष में यहाँ आप्रवासियों की एक-तिहाई आबादी एशियाई मूल में रहने वालों की थी। जनसंख्या में वृद्धि का सबसे बड़ा स्रोत तो यहाँ पढ़ाई के लिए आया छात्र वर्ग ही है। 1970 के दशक में दक्षिण पूर्व एशिया से हजारों लोगों ने ऑस्ट्रेलिया में शरणार्थी होकर पदार्पण किया। वर्ष 1988 में इसी क्षेत्र से आव्रजकों का अनुपात 40 प्रतिशत हो गया था। वर्ष 2001 में देश की साढ़े पाँच प्रतिशत जनसंख्या एशियाई मूल के लोगों की हो गई थी। किन्तु अब तो स्थायी निवास के इच्छुक सुदक्ष/सुशिक्षित व्यक्तियों को ही प्रवेश की अनुमति दी जा रही है।

बहरहाल, ऑस्ट्रेलिया की अधिकांश जनसंख्या यूरोपीय मूल में रहने वालों की है। इनमें से इंग्लैण्ड मूलक समुदाय विशालतम है। हाँ यह विशालता अब कम हो रही है। वर्ष 2004 के मध्य में ऑस्ट्रेलिया की कुल जनसंख्या 2.01 करोड़ के आँकड़े को पार कर गई थी। जन्म और मृत्यु दर के अंतर से हुई प्राकृतिक वृद्धि 2003-04 में 1,21,000 थी तो इसकी तुलना में आव्रजकों की संख्या 1,17,600 रही। जबकि द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व तो 90 प्रतिशत आव्रजन ब्रिटिश मूल के लोग होते थे। पर अब वह बात नहीं है। अब न्यूजीलैण्ड में जन्में जबकि जन समुदाय दूसरा विशालतम समूह है। यद्यपि 2003-04 में 27,811 कुशलकर्मी ऑस्ट्रेलिया से प्रव्रजन कर गए किन्तु 44,540 कुशल आव्रजकों ने इस क्षति की पूर्ति कर दी। अनुमान लगाए जा रहे हैं कि वर्तमान शताब्दी के मध्य तक ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या 2.6 से 2.7 करोड़ तक हो जाएगी।

1.5.2 जनसंख्या की विशेषताएँ

जीवन प्रत्याशा दर और जीवन स्तर

जन्म के समय ऑस्ट्रेलियाई महिलाओं की औसत जीवन प्रत्याशा दर (जीवित रहने की आयु) 80 वर्ष है – यह पुरुषों से 6 वर्ष अधिक है। प्रायः विवाह 20 से 30 वर्ष की आयु में होते हैं और 1995 में विवाहित परिवारों तथा सहवासी परिवारों की कुल संख्या 40 लाख से अधिक थी। अधिकांश परिवारों में दो बच्चे होते हैं – कुल मिलाकर 49 प्रतिशत परिवार इसी वर्ग में शामिल हैं, 30 प्रतिशत, विवाहित दम्पत्ति ऐसे भी थे जिनका कोई बच्चा नहीं था तो 13 प्रतिशत एक अभिभावकीय परिवार भी थे। महिलाएँ अपने जीवन के तीसरे दशक के अंत के पास पहुँच कर ही मातृत्व का दायित्व उठाने को तैयार होती हैं। 1961 की प्रजनन दर 3.1 प्रति नारी से घटकर 1.75 रह गई है। जनसंख्या में प्राकृतिक वृद्धि की दर में गिरावट से चिंतित सरकार अब महिलाओं को प्रजन्न के लिए प्रोत्साहन दे रही है। प्रत्येक बच्चे के जन्म पर उसकी माँ को 3000 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर की सरकारी प्रोत्साहन राशि भी दिए जाने की घोषणा की गई है।

अतः ऑस्ट्रेलियाई जन समुदाय का सामान्य स्वास्थ्य तथा जीवन स्तर यूरोपीय और अमरीकी

लोगों से किसी प्रकार कम नहीं है। पुरुष और महिला में विषमताएँ नहीं है। सभी को समान शिक्षा सुलभ है और वेतनमानों तथा सरकारी-ग़ैर-सरकारी उच्च पदों पर महिलाओं की पहुँच भी निर्बाध ही है। लगभग आधी श्रम शक्ति महिलाओं द्वारा ही रचित है।

वृद्धावस्था का प्रसार (Ageing)

अब जनसंख्या की बढ़ती आयु का प्रश्न महत्वपूर्ण होने लगा है। बच्चे पैदा होने तथा मृत्यु दर आदि पर नियंत्रण के कारण पिछली शताब्दी में जीवन प्रत्याशा दर में हुए सुधारों का एक परिणाम जनसंख्या की औसत आयु में वृद्धि हुई है। जीवन स्तर में सुधार के परिचायक इस लक्षण का प्रायः स्वागत भी हुआ है। 1970 के दशक में देश में जनसंख्या के सभी पक्षों के विस्तृत अध्ययन के समय तो यह आयु वृद्धि की समस्या महत्वपूर्ण नहीं मानी गई थी। राष्ट्रीय जनसंख्या अध्ययन - 1975 (बोरी रिपोर्ट) में इसका सरसरी उल्लेख करते हुए कहा गया था कि नीति निर्धारण स्तर पर इसका कोई प्रभाव नहीं होता। किन्तु यह प्रश्न अभी कुछ वर्षों से बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। कारण यही है कि ऑस्ट्रेलिया में प्रजनन और मृत्यु दरों में निरंतर गिरावट आ रही है और अगले कुछ वर्षों में देश में वृद्धावस्था का प्रसार बहुत तीव्र दर से होने की आशंका हो रही है। कुछ शोधकर्ताओं का आग्रह है कि इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए सरकार को अपनी आव्रजन नीतियों को और उदार बनाना चाहिए। 1980 के दशक में आव्रजन को वृद्धावस्था प्रसार निरोधन की कारगर नीति के रूप में प्रचारित किया जा रहा था पर अगले ही दशक यानी 1990 के दशक में यह स्पष्ट हो गया कि ये "वृद्धता" के प्रभावों का निराकरण करने की बहुत ही अकुशल नीति है। पिछले दशक में इस विषय पर चर्चा पुनः प्रारंभ हो गई है। कहा जा रहा है कि यदि अतीत में आव्रजन ने ऑस्ट्रेलियाई समाज को "युवा" बनाए रखा था तो भविष्य में इस संभावना को नकारने का कोई आधार नहीं होना चाहिए। किन्तु इस मत के विरोधियों का आग्रह है कि वास्तव में आव्रजन नहीं बल्कि उच्च प्रजनन तथा मृत्यु दरों के कारण ही "युवा" जनसंख्या संभव हो पाई थी। अतः अपनी "युवावस्था" को बनाए रखने के लिए ऑस्ट्रेलिया में उपयुक्त जनसंख्या नीतियाँ अपनाए जाने की आवश्यकता ही सिद्ध होती है।

शहरीकरण

ऑस्ट्रेलिया एक शहरीकृत देश है – यहाँ की 85 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में बसी है और केवल 15 प्रतिशत ही ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। नगरों में अधिकांश जनसंख्या बसी हैं बल्कि राष्ट्रीय और प्रान्तीय राजधानियों में तो जन संकेन्द्रण विशेष रूप से बहुत अधिक है। यह प्रवृत्ति बहुत ही पुरानी प्रतीत होती है। इसके कई कारण भी हैं:

i) ये नगर बड़ी बंदरगाहें भी हैं और यह विदेशी व्यापार से जुड़ी समृद्धि का बहुत प्रसार है;

ii) यूरोपीय बस्तियों के निर्माण काल से ही ये नगर प्रशासन के केन्द्र रहे हैं; और

iii) अपनी व्यावसायिक सुविधाओं तथा बड़े बाज़ारों के आकार के कारण ये अनेक उद्योगों को आकृष्ट करने में भी सफल रहे हैं।

दूरदराज़ के ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादिकता की निम्न संभावनाओं ने भी उपर्युक्त प्रवृतियों में सहयोग दिया है और उन्हें प्रोत्साहित किया है। यहाँ तक कि कृषि भी दक्षिण पूर्वी क्षेत्रों के सघन कृषि केन्द्रों से दूर नहीं फैल पाई है।

अधिकांश भू-भाग के मरुस्थलीय स्वरूप के कारण भी अधिकांश ऑस्ट्रेलियाई पूर्वी तट के क्षेत्रों में ही बसे हैं। यहाँ खनिज़ सम्पदा की प्रचुरता रही है और अतीत में ये देश एक कृषिक और विनिर्माण (उद्योग) आधारित अर्थव्यवस्था ही रहा है। किन्तु अब कच्चे माल के विदोहन पर अपनी अतिशय निर्भरता को कम करने के ध्येय से ऑस्ट्रेलिया ने सेवा क्षेत्र का विकास प्रारंभ किया है। इसके परिणामस्वरूप यहाँ नवीन रोज़गार के अवसरों का प्रसार हुआ है वहीं आर्थिक दृष्टि से कुछ निःसरण भी हो रहा है – अनेक ऑस्ट्रेलियाई उत्पादक अब अपने उद्यमों को अन्य देशों में अंतरित करने लगे हैं। फिर भी देश का कौशल आधार समृद्ध है। स्थिर सरकार तथा संचार-दूरसंचार की विकसित संरचनागत सुविधाएँ आज भी इसे एशिया-प्रशान्त महासागर क्षेत्र में अपने लिए औद्योगिक आधार खोज़ रहे उद्यमियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनाए हुए हैं।

1.5.3 ऑस्ट्रेलियाई अस्मिता (पहचान) और परिकल्पना

ऑस्ट्रेलियाई नागरिकों की अनेक प्रकार से "पहचान" की जा सकती है। कहीं इसका स्वरूप जन-सांस्कृतिक है या फिर नृजातीय, धार्मिक, नर-नारी भेदभाव सूचक, वर्ग निर्धारित या विचारधारा आधारित भी हैं। इस समाज की नृजातीय सांस्कृतिक जटिलताओं का विश्लेषण करते समय इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

राष्ट्रीय पहचान

क्या उपर्युक्त विविधताओं के बीच कोई ऐसी राष्ट्रीय अस्मिता (पहचान) भी है जो इन लोगों को एक सूत्र में बाँधे रहती है? समय के साथ-साथ अनेक ऐसे सांझे सूत्रों का उदय हुआ है जिन्हें "ऑस्ट्रेलिया की विलक्षणता" माना जाता है। किन्तु क्या वे सूत्र मौलिक रूप से ऑस्ट्रेलियाई हैं, अथवा (कृत्रिम रूप से) गढ़े जा रहे एक "राष्ट्र की छवि" का निर्माण करने के लिए ही उनकी कल्पना कर ली गई है? क्या ये प्रतिरूप आज के नृजातीय परिवेश में भी पूर्ववत् मान्य होंगे? क्या इनमें से जाने अनजाने में इस राष्ट्र के कतिपय घटकों की अनदेखी तो नहीं हो रही है? ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय पहचान की चर्चा करते समय इस प्रकार के प्रश्नों का सामना अवश्य करना पड़ता है।

"ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय पहचान" की परिकल्पना निश्चित ही समाज में व्याप्त प्रबल विचारधाराओं और चिन्तन की ही सृष्टि रही है। इस परिकल्पना के आधार पर "ऑस्ट्रेलियावासियों" को प्रजाति, धर्म और नैतिकता आधारित "चरित्र" प्रदान कर दिया गया। किन्तु देश के इतिहास काल के घटनाक्रम के कारण समाज के विकास की इस प्रक्रिया से समाज के अनेक वर्ग पूर्णतः बहिष्कृत ही होकर रह गए हैं। आज भी पुराने ब्रिटिश दंडित अपराधियों (दुःसाहसियों) का वंशज होना एक "शर्मनाक" अतीत की स्मृतियों को ताजा कर देता है। किन्तु फिर भी सामाजिक कारकों के आधार पर व्यक्ति के चरित्र की रचना के तार्किक आधार से "अपराधावृत्ति" की

नृजातीय "धरोहर" का बोझ कुछ हल्का अवश्य हो रहा है। आज राष्ट्रीय पहचान की कौन-सी सभी छवियाँ अधिक प्रखर हैं? उन्नीसवीं शताब्दी में स्वेच्छापूर्वक आकर बसे लोगों की शारीरिक मानसिक रचना ने ऑस्ट्रेलियाई व्यक्तित्व की संकल्पना पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उसे सशक्त, स्वतंत्र, अनुशासित, दृढनिश्चयी और जंगल की जीवनशैली के अनुरूप अपने आपको ढाल लेने की क्षमता से संपन्न बना दिया है। इन विशेषताओं को अतीत में यहाँ आकर बसने वाले लोगों के लिए तो अनिवार्य ही माना गया था। यह आप्रवासी बहुत ही समतावादी थी और किसी भी सत्ता के प्रति सम्मान के स्थान पर इसके मानस में अपने सहयोगी के प्रतिनिष्ठा का भाव अधिक प्रबल था। ऐसे व्यक्तियों को प्रायः अंग्रेज़ी/पश्चिम यूरोपीय मूल का मान लिया गया। परिणामतः अन्य प्रजातियों तथा देश के मूल निवासियों की पहचान दमित या दबे हुए लोगों की होकर रह गई (इस प्रकार टॉरेस जलडमरू, प्रशान्त द्वीपवासी, चीनी, जर्मन आदि मूल के नागरिकों की पहचान या विशेषताएँ भी नजरअंदाज कर दी गई)। उस अवधि के ऑस्ट्रेलियाई लेखकों, कवियों की रचनाओं में यही छवि उभर कर आई है। ये रचनाकार रहे हैं : हेनरी लॉसन, ए. बी. बेंजों, पेटरसन, और स्टील रूड आदि।

इस "व्यक्ति" के व्यवहार को "राष्ट्रीय पहचान" और ऑस्ट्रेलियाई जीवनशैली के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास हुआ है। यह अंग्रेज़-सेल्टिक पुरुष सहज भाव से परम्परावादी, समतावादी, निर्लिप्त भाव था इसके मन में किसी वर्गबद्ध समाज की कल्पना नहीं थी। इस जीवनशैली में समस्त समाज के हितों पर ही आग्रह झलकता था। किसी समुदाय विशेष के हित पोषण की लालसा नहीं। विश्रांति और चौथाई एकड़ के टुकड़े पर घर बनाकर ऑस्ट्रेलियाई जीवनशैली का सांझा लोकाचार माना गया है। दूसरे शब्दों में अनेक ऑस्ट्रेलिया वासियों का स्वप्न एक चौथाई एकड़ पर बना खुला-सा घर और एक कार का स्वामित्व ही है। विख्यात ऑस्ट्रेलियाई व्यंग्यकार बैरी हंफ्रीज ने एडना एवरिज नामक एक गृहिणी के चरित्र की रचना करते समय ऐसे ही ऑस्ट्रेलियाई सपने" को पृष्ठभूमि बनाया है।

आप्रवासी और बहुसांस्कृतिक समाज

आंग्ल-सेल्टिक पुरुषवादी जीवन आदर्शों की उपर्युक्त संकल्पना आज की बहुसांस्कृतिक समाज की वास्तविकता से मेल नहीं खाती है। भले ही उस विचार में कहीं सभी को अपने आपमें समेट लेने की धारणा निहित रही हो किन्तु वह सांस्कृतिक अंतरों को स्वीकार नहीं कर पाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि ऐसी (कृत्रिम) ऑस्ट्रेलियाई संस्कृति की अवधारणा को थोंपने के प्रयासों की अनेक क्षेत्रों में कड़ी आलोचना हुई है। इन आलोचकों में नारीवादी, मूल निवासी और विभिन्न प्रजातियों के कार्यकर्ता आदि सभी ने अपना-अपना योगदान दिया है। ये किसी एक ऑस्ट्रेलियाई जीवनशैली नहीं विविधता पूर्ण जीवन दर्शन, संस्कृति और धर्म-आस्था की स्वतंत्रता पर ही आग्रह कर रहे हैं। इन सभी के कारण ऑस्ट्रेलियाई पहचान बहुत विविधतापूर्ण हो गई है।

आदिवासी (Aboriginal)

आज ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासी भी अपनी पहचान, जीवनशैली और संस्कृति को लेकर बहुत

मुखर हो गए हैं। उन्हें 1967 में मूल नागरिक अधिकार प्रदान किए गए हैं। 1972 आते-आते उन्होंने राजधानी केनबरा में अपना "शिविर दूतावास" स्थापित कर लिया था – यह उनके पृथक अस्तित्व को अस्वीकार करने की मानसिकता के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन ही था। अन्ततः 1992 में उच्च न्यायालय ने उनके तर्कों को स्वीकार करते हुए स्वीकार किया कि जब उपनिवेश निर्माता यहाँ आए उस समय ऑस्ट्रेलिया कोई सूना पड़ा भूखंड नहीं था और इसलिए यहाँ के आदिवासियों के भी कुछ मौलिक अधिकार हैं। अब ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय सांख्यिकी ब्यूरो द्वारा संग्रहिता वार्षिक (आँकड़ों) में आदिवासियों अथवा टौरेस जलडमरू मध्यवासियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। भले ही शेष जनसंख्या में वृद्धावस्था का संचार हो रहा हो किन्तु आदिवासियों (मूल निवासियों) की जनसंख्या निरंतर "युवा" हो रही है। उनमें अभी प्रजनन और मृत्यु दर के स्तर काफी उच्च हैं। अन्य देशवासियों की अपेक्षा निम्न जीवन स्तर भोगने को विवश ये मूल निवासी निम्न स्वास्थ्य स्तर और निम्न जीवन प्रत्याशा दर की मार भी झेल रहे हैं। अंतः वे भूमि पर विशेष अधिकार तथा अपने शासन में पूरी भागीदारी के अवसरों की माँग कर रहे हैं।

ऑस्ट्रेलियाई (राष्ट्रीय) पहचान में किस प्रकार के परिवर्तन आए हैं? अपनी-अपनी पृथक पहचानों की आवाज उठा रहे समुदायों के प्रति सारा समाज किस प्रकार का दृष्टिकोण अपनाएगा। विशेषकर आदिवासियों की एक पृथक संधी की बात का तो ऑस्ट्रेलिया सरकार ने भी विरोध किया है और इस विषय पर समाज में काफी विचारविमर्श और मंथन चल रहा है। पहचान के इस मुद्दे को ऑस्ट्रेलिया किस प्रकार सुलझाएगा? इस और सभी की आँखे लगी हैं।

1.6 सारांश

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप की मुख्य भौगोलिक विशेषता इसकी समरूपता ही है। इसमें बहुत अधिक विविधता नहीं है। अधिकांश धरातल शुष्क मैदानी ही है। यहाँ की अधिकतर भूसंरचनाएँ बहुत ही प्राचीन हैं। उनकी प्राचीनता का मापन लाखों और करोड़ों वर्षों में किया जाता है। देश के तीन भौतिक भौगोलिक क्षेत्र माने जाते हैं : महान पश्चिमी पठार, मध्यपूर्वी निम्न (मैदानी) भूमि और पूर्वी उच्च भूमि। कुछ अन्य निम्न स्तरीय पट्टियाँ भी हैं – पर उन पर इस समय तो महासागर की प्रभुता का साम्राज्य छाया है। वैसे तो मौसम में बहुत उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। पर ऑस्ट्रेलिया में उपयुक्त भौतिक विशेषताओं (ऊँचे पहाड़ आदि) के अभाव के कारण मौसम के उग्र उच्चावचन नहीं आते हैं। देश के उत्तरी भागों में उष्णकटिबंधीय मानसूनी तो दक्षिण में कहीं समशीतोष्णता के दर्शन होते हैं। उत्तरी क्षेत्र लगभग 40 प्रतिशत भू-भाग में तो दो ही मौसम होते हैं। उष्ण आर्द्र तथा उष्ण शुष्क-शुष्क देश के 40 प्रतिशत अंश में वार्षिक वर्षा 10 इंच से कन रहती है तो 9 प्रतिशत अंश में 40 इंच से अधिक वर्षा होती है। अधिकांश वर्षा पूर्वी तट तक ही सीमित रह जाती है।

मौसम के परिणामस्वरूप ही देश की अधिकतर जनसंख्या पूर्वी तटीय प्रदेशों में ही कुछ एक बड़े-बड़े शहरों में बसी हैं। आज भी वहाँ की अधिकांश जनसंख्या यूरोपीय मूल की है और उसमें भी आंग्ल मूलकों की ही बहुतायत संख्या है। फिर भी देश से बाहर जन्में लोगों में इस वर्ग का

अनुपात निरंतर कम हो रहा है। पिछले कुछ समय से तो यहाँ आकर बस रहे लोगों की संख्या में एशिया से आए छात्रों का वर्ग सबसे अधिक है। अधिकाधिक एशिया मूल के लोगों को अब "कौशल संपन्न" स्थायी आप्रवासियों के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

ऑस्ट्रेलिया में जन्मदर में लगातार गिरावट और जीवन प्रत्याशा दर में निरंतर सुधार के प्रमाण मिल रहे हैं। जनसंख्या में प्रसारित हो रही "वृद्धावस्था को लेकर सरकार चिन्तित है और आप्रवजन की नीति से इसका निदान मानने के प्रश्न पर ही काफी बहस चल रही है।

आप्रवजन में वृद्धि से ऑस्ट्रेलियाई पहचान में भी अंतर स्पष्ट होने लगे हैं। अन्य देशों से आकर बसे नागरिकों के साथ-साथ अब मूल निवासियों ने भी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने हक, न्याय और पहचान की आवाज़ उठानी शुरु कर दी है। लगता है कि पहचान के परिमार्जन की यह यात्रा काफी लम्बी होगी।

1.7 अभ्यास

1) ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप की मुख्य भौतिक भौगोलिक विशेषताओं का संक्षेप में विवरण दीजिए।

2) ऑस्ट्रेलियाइयों को शुष्क महाद्वीप क्यों कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

3) ऑस्ट्रेलियाई जनसंख्या की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

4) ऑस्ट्रेलिया की पूर्व में राष्ट्रीय पहचान की संकल्पना क्या रही है। अब इसमें कैसे परिवर्तन आ रहे हैं? उन परिवर्तनों के कारण बताइए।

1.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एनसेल, एस. एण्ड एल. ब्रियसन (संपा.) *ऑस्ट्रेलियन सोसाइटी* (मेलबार्न : लॉगमैन सिसरी, 1984)

हेथकोटे, आर एल. (संपा.) *ऑस्ट्रेलिया : ए जियोग्राफी* (मेलबार्न : लॉंगमेन, 1995)।

इरविन, हेलन, टू कंस्ट्रीस्यूट नेशन : *ए कल्चरल हिस्ट्री ऑफ आस्ट्रेलियाज कंस्टीट्यूशन* (कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999)

जीन्स, डी. एन., *ऑस्ट्रेलिया : ए जियोग्राफी* (सिडनी : सिडनी यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977)

व्हाइट, रिचर्ड, *इंवेन्टिंग ऑस्ट्रेलिया : इम्जेस एण्ड आइडेंटिटी* 1688-1980 (सिडनी : एलन एंड अनविन, 1981)